



तत्त्वार्थसूत्र

प्रथम अध्याय

Presentation Developed By
Smt. Sarika Vikas Chhabra

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम्॥१॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान,
मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान – ये पाँच
ज्ञान हैं॥१॥

तत्प्रमाणे॥१०॥

वह पाँचों प्रकार का ज्ञान दो प्रमाण रूप
है॥१०॥

ये ज्ञान ही प्रमाण कैसे हैं? इन्द्रिय अथवा सत्त्विकर्ष
कैसे प्रमाण नहीं हैं?

- इन्द्रिय और सत्त्विकर्ष से सूक्ष्म, दर
और अंतरित पदार्थों का ज्ञान नहीं हो
सकता इसीलिए ये 5 ज्ञान ही प्रमाण
हैं

आद्ये परोक्षम्॥11॥

प्रथम दो ज्ञान परोक्ष प्रमाण हैं॥11॥

प्रत्यक्षमन्यत्॥12॥

शेष सब ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण हैं॥12॥

प्रमाण (सम्योज्ञान)

परोक्ष

प्रत्यक्ष

इन्द्रिय और मन की सहायता से पदार्थों को जानना

बिना किसी की सहायता के केवल आत्मा द्वारा पदार्थों को स्पष्ट जानना

प्रत्यक्ष

- अक्ष = आत्मा
- जो ज्ञान आत्मा से ही उत्पन्न होता है

परोक्ष

- पर = इन्द्रिय, प्रकाश, उपदेश, मन आदि की सहायता से उत्पन्न होता है

प्रमाण

प्रत्यक्ष

परोक्ष

विकल

सकल

मति

श्रुत

अवधि

मनःपर्यय

केवल

ऋग्म का कारण

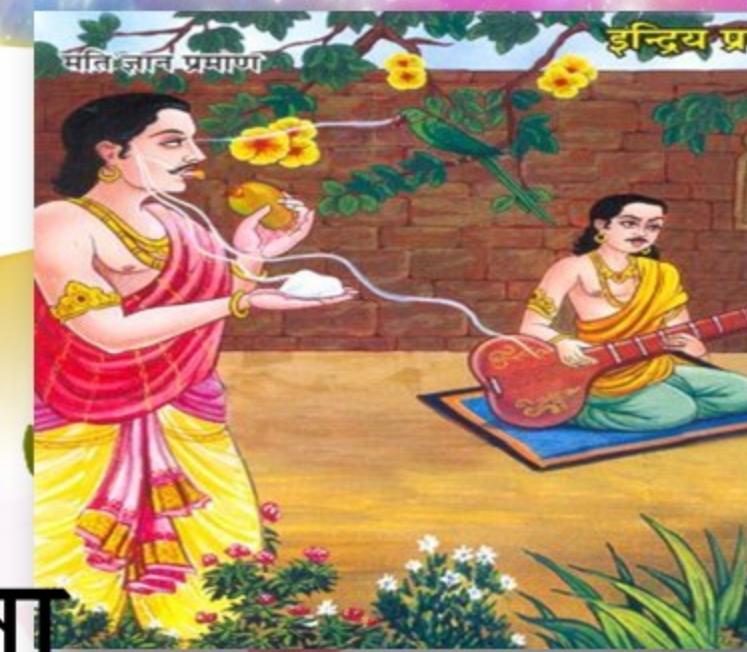
मतिज्ञान का विषय सबसे अल्प है इसीलिये इसे सबसे पहले रखा है

मतिज्ञान पूर्वक श्रुत ज्ञान होता है इसीलिये मतिज्ञान के बाद रखा है

अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञान में विशुद्धि और विषय ऋग्म से अधिक-अधिक हैं।

मतिज्ञान

इन्द्रिय और मन की सहायता
द्वारा मूर्त और अमूर्त पदार्थों को
जानना



उदाहरण

- हाथ से रुमाल छूना
- रसना से आम चखना
- नाक से खुशबू सूँघना- आम सुगंधित है
- आँखों से रंग देखना- आम पीला है
- कान से संगीत सुनना

श्रुतज्ञान

मतिज्ञान के द्वारा निश्चित किए पदार्थ का
अवलंबन करके

उस पदार्थ से संबंधित

अन्य किसी पदार्थ को जो जानता है,

उसे श्रुतज्ञान कहते हैं।

आमरस

आम

आम
पाक

उदाहरण

- आम को देख कर के दूसरी जाति के आम का विचार आना, आम से आमपाक बनता है।
- दर्पण में चेहरा देख कर अपने बारे में विचार करना मैं गोरा हो गया, काला हो गया।

विशेष

बिना मतिज्ञान श्रुतज्ञान नहीं होगा

श्रुतज्ञान के बाद पुनः श्रुतज्ञान हो सकता है

हर मतिज्ञान के बाद श्रुतज्ञान हो ही - ऐसा कोई नियम नहीं है

अवधिज्ञान

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के द्वारा

जिसकी अवधि / मर्यादा / सीमा की जाती है,

वह अवधिज्ञान है ।

अवधि ज्ञान प्रमाण

मनःपर्ययज्ञान

जीवों के मन में स्थित जो रूपी पदार्थ है,

जिनका उन जीवों ने जटिल या सरल रूप से विचार कर लिया है या
भविष्य में करेंगे,

उनको स्पष्ट जानने वाले ज्ञान को मनःपर्यय ज्ञान कहते हैं ।

केवलज्ञान

सभी द्रव्यों की सभी पर्यायों को

एक साथ

बिना इन्द्रिय और मन की सहायता के

स्पष्ट जानने वाले ज्ञान को

केवलज्ञान कहते हैं।

ज्ञान सम्बन्धी प्रयोजनभूत विचार

मति-श्रुत ज्ञान	केवलज्ञान
1. हमारा वर्तमान प्रकट ज्ञान	1. हमारा स्वभाव
2. पराधीन	2. स्वाधीन
3. क्रमिक - इन्द्रियों द्वारा पदार्थों को क्रम से जानता है	3. युगपत् - सम्पूर्ण पदार्थों को इन्द्रिय बिना एक साथ जानता है

ज्ञान सम्बन्धी प्रयोजनभूत विचार

मति-श्रुत ज्ञान	केवलज्ञान
4. क्षणिक - क्षायोपशमिक होने से क्षणिक है	4. शाश्वत - क्षायिक होने से शाश्वत रहता है
5. घटता-बढ़ता है	5. एक जैसा रहता है
6. इन्द्रियज ज्ञान है	6. अतीनिद्रियज ज्ञान है

मतिः स्मृतिः संज्ञाचिन्ता अभिनिबोध इत्यनर्थन्तरम् ॥13॥

मति, स्मृति, संज्ञा, चिन्ता और अभिनिबोध –
ये मतिज्ञान के पर्यायिकाची नाम हैं ॥13॥

मतिज्ञान के अन्य नाम

मति	स्मृति	संज्ञा	चिन्ता	अभिनिबोध
इन्द्रिय और मन की सहायता	स्मरण	जोड़सूप ज्ञान (प्रत्यभिज्ञान)	तर्क- व्याप्ति	अनुमान

स्मृति ज्ञान

पहले जानी हुई वस्तु का कालांतर में स्मरण करना स्मृति ज्ञान है

।

जिसका पहले मतिज्ञान हुआ है उसी का स्मरण हो सकता है ।

प्रत्यभिज्ञान

वर्तमान में किसी वस्तु को देखकर

पहले देखी हुई वस्तु का स्मरण होना और फिर

पहले देखी हुई वस्तु और वर्तमान में देखि हुई वस्तु का
जोड़रूप ज्ञान होना प्रत्यभिज्ञान है ।

प्रत्यभिज्ञान के भेद

एकत्व

ये वही है

साधश्य

ये उसके समान है

विसाधश्य

ये उससे भिन्न है

तत्प्रतियोगी

ये उससे छोटा या बड़ा है

व्यापि

तर्क

- व्यापि के ज्ञान को तर्क कहते हैं।

- साध्य के अभाव में साधन के अभाव को तथा साधन के सद्ब्राव में साध्य के सद्ब्राव को व्यापि कहते हैं।
- इसे अविनाभाव भी कहते हैं। जैसे - अग्नि और धुँआ

उदाहरण

साध्य
= अग्नि

साधन =
धुँआ

साध्य =
आत्मा

साधन =
ज्ञान

साध्य =
पुद्गल

साधन =
रंग

साध्य =
मुनि

साधन =
कमंडल

आभिनिबोध (अनुमान ज्ञान)

साधन से साध्य के ज्ञान को अनुमान ज्ञान
कहते हैं ।

जैसे - रसोई में धुँआ दिख रहा है अतः वहाँ
अग्नि होनी चाहिए ।

आभिनिबोधिक ज्ञान

(इन्द्रिय और मन की सहायता के द्वारा होने वाला ज्ञान)

आभिनिबोधिक

- अभि + नि + बोध = अभिमुख + नियमित + ज्ञान

अभिमुख

- स्थूल, वर्तमान योग्य क्षेत्र में अवस्थित पदार्थ

नियमित

- जिस-जिस इन्द्रिय का जो-जो निश्चित विषय
- जैसे चक्षु का रूप

साधन



साध्य



- जहाँ जहाँ ज्ञान होता है वहां आत्मा होता है | ← तर्क
- इस व्यक्ति के ज्ञान है अतः यह जीव है | ← अनुमान



स्मृति

मति ज्ञान

प्रत्यभिज्ञान

मति

+ स्मृति ज्ञान

तर्क

मति

+ स्मृति

+ प्रत्यभिज्ञान
ज्ञान

अनुमान

मति

+ स्मृति

+ प्रत्यभिज्ञान

+ तर्क ज्ञान



ये सब मतिज्ञान के
पर्यायवाची हैं अर्थात् इन
सबका मतिज्ञानावरण के
क्षयोपशम से कार्य बनता
है ।

उदाहरण

मति ज्ञान

देवदत्त को जानना

स्मृति

वह देवदत्त

प्रत्यभिज्ञान

यह वह देवदत्त है

तर्क

आत्मा के बिना शरीर का व्यापार नहीं होता

अनुमान

इस शरीर में हलन चलन हो रही है अतः यहाँ आत्मा होना चाहिये

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ 14 ॥

वह (मतिज्ञान) इन्द्रिय और मन के निमित्त से
होता है ॥ 14 ॥

मतिज्ञान की उत्पत्ति

5 इन्द्रिय

आत्मा की
पहिचान के चिह्न

मन

अनिन्द्रिय/
नोइंद्रिय
किंचित् इन्द्रिय

इन्द्रिय अर्थात्

इन्द्र= आत्मा, अपने जिन चिह्नों के द्वारा वह पदार्थों को जानता है उसे
इन्द्रिय कहते हैं

इन्द्र= आत्मा, जिन चिह्नों के द्वारा आत्मा का अस्तित्व जाना जाता है
उसे इन्द्रिय कहते हैं

जो इन्द्र की तरह अपना कार्य करने में स्वयं समर्थ हों

इन्द्र अर्थात् नामकर्म, उसके द्वारा जो रची जाय उसे इन्द्रिय कहते हैं

अनिन्द्रिय =
मन

मन किंचित् इन्द्रिय कैसें?

बाकि इन्द्रियों का स्थान और विषय निश्चित है किन्तु

मन का स्थान और विषय निश्चित नहीं हैं

चक्षु आदि की तरह स्पष्ट दिखाई भी नहीं देता है

शंका - प्रकाश और पदार्थ को मतिज्ञान की उत्पत्ति का कारण क्यों नहीं कहा?

- समाधान -- प्रकाश और पदार्थ के बिना भी ज्ञान की उत्पत्ति देखी जाती है किन्तु इन्द्रिय और मन के बिना मतिज्ञान की उत्पत्ति नहीं देखी अतः प्रकाश और पदार्थ को मतिज्ञान की उत्पत्ति का कारण नहीं कहा ।

अवग्रहेहावायधारणा: ||15||

अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा - ये मतिज्ञान
के चार भेद हैं।।15।।

मतिज्ञान के भेद

	अवग्रह	ईहा	अवाय	धारणा
स्वरूप	सर्वप्रथम जानना	इच्छा- अभिलाषा	निर्णय	भूलना नहीं
कालांतर में		संशय- विस्मरण हो जाता है	संशय तो नहीं, पर विस्मरण होता है	न संशय, न विस्मरण होता है

अवग्रह

इन्द्रिय और पदार्थ का सम्बन्ध होते ही जो सामान्य ग्रहण होता है उसे दर्शन कहते हैं ।

दर्शन के अवांतर ही जो पदार्थ का ग्रहण है वह अवग्रह कहलाता है ।

जैसे - चक्षु से सफेद रूप को जानना ।

दर्शन और अवग्रह में अंतर

दर्शन

- इसमें जानना निर्विकल्प होता है ।
- दर्शनावरण कर्म का क्षयोपशम निमित्त होता है ।
- जैसे उसी दिन जन्मे बालक के पहली बार नेत्र खोलने पर विशेष शून्य प्रतिभास ।

अवग्रह

- इसमें जानना सविकल्प होता है ।
- मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम निमित्त होता है ।
- जैसे – यह रूप है, यह पुरुष है आदि रूप से जानना ।

धारणा ज्ञान

निर्णीत वस्तु का कालांतर में भी स्मरण आने
का कारणभूत ज्ञान धारणा ज्ञान है ।

जैसे - ऐसा याद रहना कि वह बगुलों की पंक्ति
देखी थी ।

नोट - याद आना अलग विषय है ।
याद आना 'स्मृति' ज्ञान है । याद रहना धारणा ज्ञान है ।

ईहा ज्ञान

अवग्रह से गृहीत पदार्थ के

किसी विशेष अर्थ को

जानने की आकांक्षा होने पर

पदार्थ के निर्णय की ओर ढलता ज्ञान

ईहा ज्ञान कहलाता है ।

अवाय ज्ञान

ईहा ज्ञान के अनंतर

वस्तु के विशेष चिह्नों को देखकर

वस्तु का सम्यक् प्रकार निर्णय करना

अवाय ज्ञान है ।

विशेष

- इहा ज्ञान संशय रूप नहीं होता है क्योंकि यह प्रमाण ज्ञान है और संशय मिथ्याज्ञान स्वरूप होता है।
- यह ४ ज्ञान क्रम से उत्पन्न होते हैं अतः इसी क्रम से सूत्र में इन्हें बताया गया है।
- क्रम से होने पर भी उत्तर वाला ज्ञान नियम से हो ही ऐसा ज़रूरी नहीं है।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम्॥16॥

सेतर (प्रतिपक्षसहित) बहु, बहुविध, क्षिप्र,
अनि:सृत, अनुक्त और ध्रुव के अवग्रह, ईहा,
अवाय और धारणा रूप मतिज्ञान होते हैं॥16॥

अर्थस्य ॥17॥

अर्थ (वस्तु के) अवग्रह, ईहा, अवाय और
धारणा - ये चारों मतिज्ञान होते हैं ॥17॥

मतिज्ञान के विषयभूत पदार्थ के भेद

बहु

बहुविध

एक

एकविध

क्षिप्र

अक्षिप्र

अनिःसृत

निःसृत

अनुकूल

उक्त

ध्रुव

अध्रुव

इन्हीं 12 भेदों को कुल 28 भेदों से गुणा करने पर
 $12 \times 28 = 336$ मतिज्ञान के भेद होते हैं।

मतिज्ञान के विषयभूत 12 प्रकार के पदार्थ

बहु

बहुत पदार्थ (संख्या
वाचक)

गौरी, सांवली, काली
आदि अनेक गाय

बहुविध

बहुत प्रकार के पदार्थ
(प्रकार वाचक)

गाय, भैंस, घोड़ा आदि
अनेक जाति

एक

एक पदार्थ

एक गोरी गाय

एकविध

एक प्रकार के पदार्थ

गोरी, सांवली, काली आदि
गाय (एक जाति - गाय)

अंतर

	एक/ अल्प	बहु
	एक व्यक्ति	बहु जाति की बहु व्यक्ति
विध	एक जाति	बहु जाति

क्षिप्र

शीघ्र

शीघ्र पड़ती जलधारा या
जलप्रवाह

अक्षिप्र

मंद

धीरे चलता कछुआ
आदि

अनिःसृत

गूढ़

जल में झूबा हाथी

निःसृत

प्रकट

जल से निकला
हाथी

अनुकूल

बिना कहा

हाथ या शिर के इशारे से बिना
कहे 'हाँ' या 'ना' समझना

उत्कूल

कहा हुआ

किसी ने कहा "ये घड़ा है"

ध्रुव

अचल / बहुत काल
स्थायी

पर्वतादि

अध्रुव

चंचल / विनाशीक

क्षणस्थायी बिजली
आदि

श्रोत्र इंद्रिय संबंधी बहु आदि ज्ञान

बहु

- एक साथ तत, वितत, घन आदि शब्दों को सुनना

एक

- इनमें से किसी एक-दो शब्दों को ही सुनना

बहुविध

- तत, वितत, घन आदि के अनेकों प्रकारों को सुनना

एकविध

- किसी एक-दो प्रकारों को ही जानना

क्षिप्र

- शीघ्रता से कहे शब्द, वाक्य आदि को सुनना

अक्षिप्र

- मंदता से कहे शब्द, वाक्य आदि को सुनना अथवा धीरे धीरे सुनना

अनिःसृत

- पूरे वाक्य का उच्चारण ना होने पर भी जान लेना कि क्या कहा है

निःसृत

- पूर्ण रूप से उच्चारित होने पर सुनना

अनुकूल

- एक भी शब्द का उच्चारण हुए बिना अभिप्राय मात्र से अर्थ को ग्रहण कर लेना

उत्त

- कहे गए शब्द को जान लेना

ध्रुव

- जैसा प्रथम समय में शब्द का ग्रहण हुआ वैसा ही द्वितीय आदि समयों में शब्द का ग्रहण करना । ना न्यून, ना अधिक ।

अध्रुव

- कभी बहुत शब्दों को जानना, कभी अल्प को, कभी एकविध को, कभी बहुविध को इत्यादि रूप ज्ञान को अध्रुव कहते हैं ।

नोट : पर-उपदेशपूर्वक शब्दों का ग्रहण उत्त है । जैसे 'यह गाय है' - यह सुनकर गाय का ज्ञान । स्वतः गाय को देखकर ज्ञान होना निःसृत ज्ञान है ।

चक्षु इंद्रिय संबंधी बहु आदि ज्ञान

बहु

शुक्ल, कृष्ण, लाल, नीला आदि बहुत वर्णों का ज्ञान होना

एक

किसी एक-दो रंगों का जानना

बहुविधि

अनेक प्रकार के रंगों का जानना

एकविधि

एक दो-प्रकार के रंगों का जानना

क्षिप्र

शीघ्रता से गतिमान वर्णों का जानना

अक्षिप्र

मंदरूप परिणत वर्णों का जानना

अनिःसृत

वस्त्र के एक छोर के रंगों को देखकर पूरे वस्त्र के रंगों का ज्ञान हो जाना अथवा एक वस्त्र के एकदेश रंग को देखकर अन्यत्र स्थित वस्त्र के रंग का ज्ञान होना

निःसृत

पूरे वस्त्र को देखकर वर्णों का जानना

अनुक्त

दूसरे के कहे बिना अभिप्राय मात्र से यह जान लेना कि इन रंगों के मिश्रण से यह रंग बनाएंगे

उक्त

कहे जाने पर रूप को ग्रहण करना

ध्रुव

जैसा प्रथम समय में रूप ग्रहण किया है वैसा ही द्वितीय आदि समय में भी जानना ।
ना न्यून, ना अधिक ।

अध्रुव

कभी बहु रूप को जानना, कभी बहुविध को, कभी एक को, कभी एकविध को
इत्यादि अध्रुव रूप से रूप को ग्रहण करता हुआ ज्ञान

बहु

- चना दाल, तुअर दाल

बहुविध

- रोटि सजी, दाल, लड्के, बूढ़े

एक

- एक काला आदमी, एक बड़ा बंगला

एकविध

- काली पीली नीली लाईट, चना , चावल

क्षिप्र

- हवाई जहाज, उड़ता पक्षी

अक्षिप्र

- कछुआ, केंचुआ, साईकिल

निःसृत

- सामने दिखता मेंढक, पहाड़ चढ़ता व्यक्ति

अनिःसृत

- गैलरी से झाँकता बालक, सूँड से हाथी का ज्ञान

उत्त

- बालक का कहना - मुझे भूख लगी है, आम चखकर मीठे का ज्ञान होना

अनुत्त

- रोनी सूरत से दुख का ज्ञान होना

- हल्के का रंग देखकर मीठास का ज्ञान होना

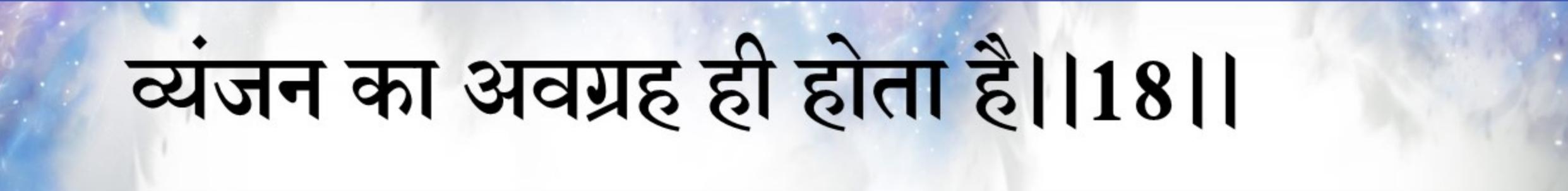
ध्रुव

- स्थिर पहाड़

अध्रुव

- चमकती बिजली

व्यंजनस्थावग्रहः ॥१८॥



व्यंजन का अवग्रह ही होता है ॥१८॥

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥

चक्षु और मन से व्यंजनावग्रह नहीं होता ॥१९॥

अवग्रह के भेद

व्यंजनावग्रह

अव्यक्त -
अप्रकट

जैसे - नूतन मिट्टी के
घड़े पर 1-2 बूंद
व्यक्त नहीं

प्राप्त

स्पर्श, रस, गंध,
शब्द का स्पर्शित
होना

अर्थावग्रह

व्यक्त - प्रकट

अधिक बूंद पड़ने पर
व्यक्त

अप्राप्त

स्पर्शित न होना

स्पर्शन, रसना, घ्राण, कर्ण इन्द्रिय द्वारा व्यंजनावग्रह होकर अर्थावग्रह होता है ।

चक्षु इन्द्रिय और मन द्वारा अर्थावग्रह होता है ।

$$\begin{aligned}\text{अतः मतिज्ञान के भेद} &= 6 \text{ (इन्द्रिय-मन)} \times 4 \text{ (अवग्रहादि)} \\ &+ 4 \text{ (व्यंजनावग्रह— स्पर्शन, रसना, घ्राण, कर्ण)} \\ &= 24 + 4 = 28\end{aligned}$$

व्यंजनावाग्रह 4



अर्थावग्रह 6



ईहा 6



मतिज्ञान के 28 भेद



अवाय 6



धारणा 6

विशेष

4 इन्द्रियाँ प्राप्यकारी हैं ।

- अर्थात् सामान्यतया पदार्थों से सन्निकर्ष (स्पर्श) करके ज्ञान होता है ।

चक्षु और मन अप्राप्यकारी हैं ।

- अर्थात् बिना पदार्थ के सन्निकर्ष के ही ज्ञान होता है ।

प्रश्न - शब्द, गंध आदि भी तो दूर रहते हैं । फिर भी इनका ज्ञान हो जाता है । तब इन्हें भी अप्राप्यकारी ही कहो ।

उत्तर- ऐसा नहीं है । शब्द, गंध आदि उत्पन्न होने पर समीपवर्ती स्कंध उस शब्द, गंधरूप होते हैं । उनका सन्निकर्ष होता है, तब ज्ञान होता दिखाई देता है । अतः ये प्राप्यकारी भी हैं ।

व्यंजनावाग्रह

व्यंजन = व्यक्त शब्दादि के समूह को व्यंजन कहते हैं ।

छूकर जो रस, स्पर्श, शब्द और गंध का विषय (प्राप्त का) ग्रहण होता है उसे व्यंजनावाग्रह कहते हैं

अर्थावग्रह

अप्राप्त / व्यक्त ग्रहण

अर्थावाग्रह कहलाता है ।

विशेष

4 इन्द्रियाँ प्राप्यकारी हैं ।

अर्थात् सामान्यतया पदार्थों से स्पर्श करके ज्ञान होता है ।

चक्षु और मन अप्राप्यकारी हैं ।

अर्थात् बिना पदार्थ के सन्त्रिकर्ष के ही ज्ञान होता है ।

अवग्रह

व्यंजनावग्रह

अर्थावग्रह

अप्रगट - अव्यक्त ज्ञान

प्रगट - व्यक्त पदार्थों का ज्ञान

चक्षु और मन के बिना होता है

५ इन्द्रिय और मन से होता है

इसमें आगे सिर्फ अर्थावग्रह ही हो सकता है

इसमें आगे ईहा, अवाय और धारणा हो सकती है

मतिज्ञान के भेद

मतिज्ञान के स्थान	सामान्य (पदार्थ)	अर्थ (बहु आदि 6)	पूर्ण (बहु आदि 12)
सामान्य अपेक्षा	1	6	12
अवग्रहादि अपेक्षा	4	24	48
इन्द्रिय और मन अपेक्षा (4 × 6)	24	144	288
अर्थावग्रह और व्यंजनावग्रह के भेद-सहित	28	168	336

ज्ञान की उत्पत्ति का क्रम

चक्षु को छोड़कर कर शेष चार इन्द्रियाँ	अचक्षुदर्शन → व्यञ्जनावग्रह → अर्थावग्रह → ईहा → अवाय → धारणा
चक्षु इन्द्रिय	चक्षुदर्शन → अर्थावग्रह → ईहा → अवाय → धारणा
मन	अचक्षुदर्शन → अर्थावग्रह → ईहा → अवाय → धारणा